



‘शुबिल’, इस अफ्रीकन पक्षी का नाम अगर मॉनस्टर फेस या डैथ पैलिकन होता तो बेहतर होता। इसे पृथ्वी का सबसे ज्यादा डरावना पक्षी भी कहा जा सकता है, जिसके करीब जाने से डर लगता है। अफ्रीका के पूर्वी कटिबंधीय वनों के दलदली भागों में रहने वाला यह पक्षी उन्हीं जीवों का शिकार करता है जो उससे थोड़े छोटे होते हैं। लंगफिश, ईल, कैट फिश जैसी बड़ी मछलियों के साथ-साथ ये पक्षी नाइल मॉनीटर लिजर्ड, साप और छोटे मगरमच्छों तक को खा जाते हैं। जी हां, सुनने में आश्चर्यजनक लगता है, किन्तु सत्य है। शिकार करते समय शुबिल मूर्ति की तरह स्थिर खड़े हो जाते हैं और इंतजार करते हैं, जैसे ही कोई लंगफिश या मगरमच्छ का बच्चा पास से गुजरता है ये उसे झपट लेते हैं और अपनी बड़ी सी चोंच से, पानी, घास पात और कीचड़ सहित उसे निगल लेते हैं। उसके बाद अपने बड़े से सिर को आगे-पीछे हिलाते हैं और भोजन के अलावा जो भी फालतू चीजें यह मुंह में चली जाती हैं उन्हें धीरे-धीरे बाहर निकालना शुरू कर देते हैं, जब मुंह में सिर्फ भोजन रह जाता है तब अपनी चोंच के तीखे किनारों से उसके टुकड़े करके निगल लेते हैं। काफी डरावना दृश्य होता है। लेकिन फिर भी इनसे प्रभावित हुए बिना भी नहीं रह सकते। शुबिल लम्बे समय तक पड़त पसदीवा प्रजाति रहे हैं। प्राचीन मिस्र की कलाकृतियों में इन्हें देखा जाता है। प्राचीन अरब के लोग कथित रूप से इन्हें अबू मरखुब कहते थे जिसका अर्थ है ‘फावर ऑफ ए स्लिपर’। डैनमार्क के विख्यात लकड़ी के जूतों जैसी नजर आने वाली अपनी चोंच से ये पक्षी मशीनगन चलने जैसी आवाजें भी निकालते हैं। वैसे तो, अधिकतर समय ये शांत रहते हैं पर घोंसले के आसपास या किसी अन्य पक्षी से मिलते समय अपनी चोंच से पटपट जैसी डरावनी और तेज आवाजें निकालते हैं। इनकी एक और खास बात है कि, ये अपने पैरों पर शौच करते हैं, क्योंकि इससे उन्हें ठंडक मिलती है। शुबिल को, बोत्सवाना व ज़ैम्बिया के दलदली इलाकों में रहने वाले, सैमी अवैटिक एन्टिलोप (हिरण), रैंड लैंचवे का शिकार करते भी देखा गया है। सौ किलो से अधिक वजन वाले पूर्ण विकसित रैंड लैंचवे परभक्षियों से बचने के लिए पानी का इस्तेमाल करते हैं। तथापि, रैंड लैंचवे के बच्चे काफी छोटे होते हैं और अक्सर शुबिल का शिकार बन जाते हैं। शुबिल का पाचन तंत्र इतना मजबूत होता है कि ये किसी भी जानवर को खा सकते हैं। अक्सर पूछा जाता है कि, क्या ये भयानक पक्षी इंसानों को भी मार सकते हैं। यह देखते हुए कि, क्रोकोडाइल से युद्ध में उनकी विजय की संभावना होती है, शायद उत्तर ‘हां’ हो, लेकिन अभी तक इंसान पर हमले की कोई जानकारी नहीं मिली है। शोधकर्ता इस प्रागैतिहासिक पक्षी और इसके घोंसले के 6 फीट करीब तक ही जा पाते हैं। वैसे ये इंसान पर हमला नहीं करते, केवल घूरते हैं लेकिन इनका घूरना भी काफी डरावना होता है।

## ‘विभाजन की ‘टू नेशन’ थ्योरी भाजपा के सावरकर ने ही दी थी’

छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की भारत जोड़ो पद यात्रा के समापन के मौके पर मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने भाजपा पर बेहद आक्रामक आरोप लगाये

रायपुर, 14 अगस्त। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने भाजपा पर बड़ा हमला बोला है। मुख्यमंत्री बघेल ने कहा कि, देश के विभाजन के लिए गांधी या नेहरू नहीं बल्कि सावरकर और मोहम्मद अली जिन्ना हैं। छत्तीसगढ़ में 9 अगस्त से शुरू हुई कांग्रेस की भारत जोड़ो पद यात्रा का समापन रविवार 14 अगस्त को दुर्ग जिले के पाटन में हुआ। इस मौके पर एक सभा में छत्तीसगढ़ के

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने अपने संबोधन में ये बात कही। कांग्रेस की भारत जोड़ो पद यात्रा के समापन के मौके पर सीएम भूपेश बघेल ने देश की आजादी के लिए शहादत देने वाले वीर सपूतों को याद किया। इस दौरान कांग्रेस के सभी बड़े नेता और मंत्री मौजूद रहे। मुख्यमंत्री बघेल ने कहा कि, टू नेशन थ्योरी का प्रस्ताव सावरकर ने दिया था और इसे मोहम्मद अली जिन्ना ने समर्थन दिया था।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने इस आमसभा को संबोधित करते हुए कहा कि, आज के दिन देश का बंटवारा हुआ था। विभाजन के लिए बहुत से लोग महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू और सरदार वल्लभ भाई पटेल को दोषी मानते हैं। बघेल ने कहा, ‘‘मैं कहता हूँ कि, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संगठन आरएसएस 1925 में बना था। उस समय ये लोग क्या कर रहे थे जब

1942 में अंग्रेजों भारत छोड़ो का नारा दिया गया। सभी पहली पंक्ति के नेताओं को जेल में दूंस दिया गया था। उस समय यही आरएसएस के लोग श्यामा प्रसाद मुखर्जी से लेकर गोलवलकर तक यह सलाह दे रहे थे कि देश की आजादी की इस मुहिम को कैसे कुचला जाए।

उन्होंने आगे कहा, ‘‘ये लोग अंग्रेजों की मुखबिरी करने का काम करते थे। आज यदि देश का बंटवारा हुआ है तो इसके लिए सही मायने में सावरकर जिम्मेदार है। 1925 में सावरकर ने हिंदू महासभा में बोलते हुए कहा कि, इस देश के दो राष्ट्र बनने चाहिए। यही भाषा मोहम्मद अली जिन्ना बोल रहे थे।

इसलिए देश के बंटवारे के लिए गांधी जी जिम्मेदार नहीं, सावरकर और मोहम्मद अली जिन्ना जिम्मेदार हैं।

## सलमान रश्दी की हालत स्थिर

न्यूयॉर्क, 14 अगस्त। प्रख्यात लेखक सलमान रश्दी की हालत में सुधार हुआ है। रश्दी को वेंटिलेटर से भी हटा दिया गया है और वो अब बात भी कर रहे हैं। उन पर एक दिन पहले न्यूयॉर्क में हमला किया गया था। अमेरिकी प्राधिकारियों ने इस हमले को लक्षित, बिना उकसावे का और पूर्व

उन्हें वेंटिलेटर से हटा दिया गया है तथा अब वे बात भी कर पा रहे हैं।

नियोजित बताया। मुंबई में जन्मे विवादास्पद लेखक रश्दी को द सैटैनिक वर्सेज लिखने के बाद कई सालों तक इस्लामी चरमपंथियों से मौत की धमकियों का सामना करना पड़ा था। उन्हें न्यूजर्सी के 24-वर्षीय निवासी हादी मतर ने पश्चिमी न्यूयॉर्क राज्य में एक कार्यक्रम में चाकू मार दिया था। चौटाउकवा इंस्टीट्यूशन के अध्यक्ष माइकल हिल ने शनिवार रात को ट्वीट किया, सलमान रश्दी अब वेंटिलेटर पर नहीं हैं और बातचीत कर रहे हैं। सभी लोग दुआएं कर रहे हैं।

## दिग्गज निवेशक राकेश झुनझुनवाला का निधन

राकेश झुनझुनवाला शेयर बाजार के सबसे बड़े निवेशकों में से एक थे, वे जब कॉलेज में थे तभी से उन्होंने शेयर बाजार में हाथ आजमाना शुरू कर दिया था

मुंबई, 14 अगस्त। शेयर बाजार के दिग्गज निवेशक राकेश झुनझुनवाला का निधन हो गया है। बताया जा रहा है कि उन्होंने रविवार सुबह मुंबई के ब्रीच कैन्डी अस्पताल में अंतिम सांस ली। जानकारी के मुताबिक, कुछ सप्ताह पहले ही वह अस्पताल से डिस्चार्ज हुए थे। उनका निधन किन कारणों से हुआ है, अभी यह स्पष्ट नहीं हुआ है। झुनझुनवाला 62 साल के थे। जानकारी के मुताबिक, आज सुबह 6:45 मिनट पर उनका निधन हो गया। झुनझुनवाला के परिवार में उनकी पत्नी रेखा झुनझुनवाला, बेटी निश्था व दो बेटे आर्यमन और आर्यवीर हैं।

झुनझुनवाला के निधन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा, वह अद्भुत व्यक्ति थे। जीवन से भरपूर, हार्डवर्कवादी और व्यावहारिक थे। उन्होंने कहा,

झुनझुनवाला ने 1985 में 5,000 रुपये से निवेश की शुरुआत की थी। सितंबर, 2018 तक यह निवेश बढ़कर 11,000 करोड़ रुपये हो गया था। जानकारी के मुताबिक, वर्तमान में झुनझुनवाला की कुल संपत्ति 43 हजार करोड़ रुपये से अधिक है।

राकेश झुनझुनवाला की आयु 62 साल थी, उन्हें कार्डियक अरेस्ट के बाद मुंबई के ब्रीच कैन्डी अस्पताल में भर्ती कराया गया था।

झुनझुनवाला अपने पीछे आर्थिक दुनिया में अमिट योगदान छोड़ गए हैं। वह भारत की प्रगति को लेकर बहुत जुनूनी थे। ब्रीच कैन्डी अस्पताल की डॉ. प्रतीत समदानी ने बताया कि राकेश झुनझुनवाला को अचानक कार्डियक अरेस्ट हुआ, जो उनकी मौत का कारण बना। वह क्रोनिक किडनी रोग से भी पीड़ित थे, क्रोनिक डायलिसिस पर थे। वह मधुमेह के रोगी थे और हाल ही में उनकी एंजियोप्लास्टी हुई थी। कई तरह के व्यापारों में निवेश करने वाले राकेश झुनझुनवाला ने हाल ही में अकासा एयरलाइंस पर भी निवेश किया था। इसमें 40 प्रतिशत हिस्सेदारी झुनझुनवाला के पास थी।

## कुलगाम में ग्रनैड हमला, एक जवान शहीद

श्रीनगर, 14 अगस्त। जम्मू कश्मीर के कुलगाम जिले में ग्रेनेड हमले में एक पुलिसकर्मी की मौत हो गयी। पुलिस ने रविवार को बताया कि, यह घटना शनिवार रात को दक्षिण कश्मीर जिले के

शनिवार देर रात आतंकियों ने पुलिस पर ग्रनैड हमला किया जिसमें एक पुलिसकर्मी शहीद हो गया।

केमोह इलाके में हुई। कश्मीर मंडल की पुलिस ने ट्वीट किया, ‘‘कुलगाम के केमोह में बीती रात ग्रेनेड हमला किया गया। इस आतंकी घटना में पुंछ के मेंडर में तैनात ताहिर खान नामक पुलिसकर्मी घायल हो गया।’’ पुलिस ने बताया कि, घायल पुलिसकर्मी को अर्न्तनाग के जीएमसी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनकी मौत हो गयी। 13 अगस्त को श्रीनगर में अली जान रोड, इंदगाह के पास आतंकियों की ओर से सुरक्षाबलों पर ग्रेनेड फेंका गया था।

## महाराष्ट्र में मंत्रालयों के मामले में भाजपा भारी पड़ी शिंदे गुट पर

वित्त, गृह, जल संसाधन एवं आवासन विभाग जैसे चार मंत्रालय उप मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने अपने पास रखे

मुंबई, 14 अगस्त। महाराष्ट्र में एकनाथ शिंदे सरकार के कैबिनेट विस्तार के बाद मंत्रालयों का बंटवारा भी हो चुका है। अब सवाल यह उठता है कि, मंत्रालयों के बंटवारे में किसकी चली है। जिस तरह से विभाग बांटे गए हैं, उससे स्पष्ट है कि, इसमें देवेंद्र फडणवीस ही बौस साबित हुए हैं। इसके साथ ही यह भी साफ हो चुका है कि, भले ही भाजपा ने उन्हें शिंदे सरकार में डिप्टी सीएम पद दिया है, लेकिन बाकी मामलों में प्रो हेंड दिया गया है। रविवार को घोषित शिंदे सरकार के विभागों के बंटवारे पर नजर डालें तो फडणवीस का मास्टरस्ट्रोक साफ

दिखेगा। असल में एनसीपी ने महाविकास अघाड़ी सरकार में शिवसेना को सीएम पद देकर अहम विभाग अपने पास रखे थे। अब भाजपा की चली है। जिस तरह से विभाग बांटे गए हैं, उससे स्पष्ट है कि, इसमें देवेंद्र फडणवीस ही बौस साबित हुए हैं। इसके साथ ही यह भी साफ हो चुका है कि, भले ही भाजपा ने उन्हें शिंदे सरकार में डिप्टी सीएम पद दिया है, लेकिन बाकी मामलों में प्रो हेंड दिया गया है। रविवार को घोषित शिंदे सरकार के विभागों के बंटवारे पर नजर डालें तो फडणवीस का मास्टरस्ट्रोक साफ

इसके साथ ही यह भी साफ हो चुका है कि, भले ही भाजपा ने उन्हें शिंदे सरकार में उप मुख्यमंत्री पद दिया है, लेकिन बाकी मामलों में उन्हें प्रो हेंड दिया गया है। भाजपा को मिले मंत्रालय-गृह मंत्रालय, राजस्व मंत्रालय, हाउसिंग, महिला एवं बाल विकास, वित्त, उर्जा, गृह निर्माण, सिंचाई इरिगेशन, पर्यटन। सहकारिता, ओ.बी.सी. मामलों का मंत्रालय हायर एंड टैक्निकल एजुकेशन, वन मंत्रालय, पीडब्ल्यूडी, मेडिकल एजुकेशन, ग्रामीण विकास, फूड एंड सिविल सप्लाई, आदिवासी विकास, टैक्सटाइल एवं लेबर।

भाजपा ने ज्यादातर मलाईदार हिस्सा अपने ही नेताओं के पास रखा

बता दें कि यह सभी विभाग ऐसे हैं, जिनका आम जनता से सीधा

ताल्लुक है। इन विभागों को अपने पास रखने के साथ ही भाजपा ने अपनी मंशा साफ कर दी है। भाजपा के पास यह विभाग होने से महाराष्ट्र में आम लोगों से उसका संपर्क बढ़ेगा। इसके साथ ही जनहित के फैसलों को लागू करते हुए भाजपा यहां पर पार्टी विस्तार की अपनी पॉलिसी पर भी काम कर सकेगी। महाविकास अघाड़ी सरकार में यह खेले एनसीपी खेल रही थी। अब फडणवीस ने भी बड़े ही सघे अंदाज में यह चाल चली है।

भाजपा को मिले मंत्रालय- गृह मंत्रालय, राजस्व मंत्रालय,

हाउसिंग, महिला एवं बाल विकास, वित्त, उर्जा, गृह निर्माण, सिंचाई इरिगेशन, पर्यटन। सहकारिता, ओबीसी मामलों का मंत्रालय हायर एंड एजुकेशन, वन मंत्रालय, पीडब्ल्यूडी, मेडिकल एजुकेशन, ग्रामीण विकास, फूड एंड सिविल सप्लाई, आदिवासी विकास, टैक्सटाइल,लेबर।

शिंदे गुट के पास मंत्रालय-

नगर विकास, एफ डी ए, जल आपूर्ति, इंडस्ट्री, स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा, आबकारी मंत्रालय, स्वास्थ्य, रोजगार गारंटी स्कीम।

## 38 साल बाद मिला शहीद का शव

नैनीताल, 14 अगस्त (वार्ता)। दुनिया के सबसे दुर्गम युद्ध क्षेत्र सियाचिन से 38 साल बाद उत्तराखंड के एक जवान का शव बरामद हुआ है। सेना की ओर से रविवार को इसकी जानकारी हलद्वानी में रह रहे शहीद की पत्नी व परिजनों को दी गयी। लंबे समय बाद एक बार फिर परिजनों के घाव फिर

दुनिया के सबसे दुर्गम युद्ध क्षेत्र सियाचिन से 38 साल बाद उत्तराखण्ड के एक जवान का शव बरामद हुआ है।

हरे हो गये। उपजिलाधिकारी मनीष कुमार ने इसकी पुष्टि करते हुए बताया कि, लांसनायक चंद्रशेखर हरबोला सेना की 19 कुमाऊं रेजीमेंट में तैनात थे। वर्ष 1984 में वह सियाचिन में तैनात थे। बताया जाता है कि, उनके दल को पाकिस्तान सेना के खिलाफ मेघदूत आपरेशन की जिम्मेदारी दी गयी।